हवा की कहानी

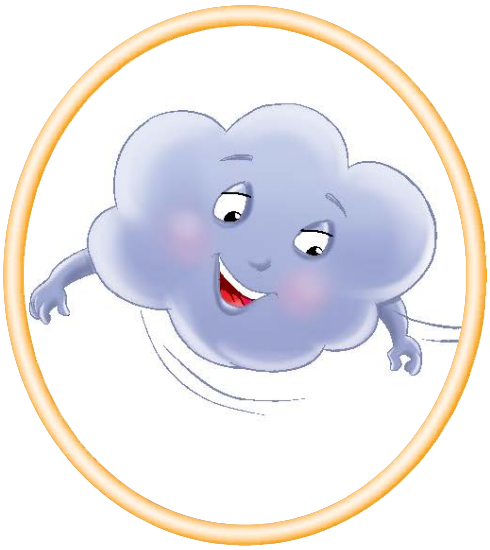

हवा

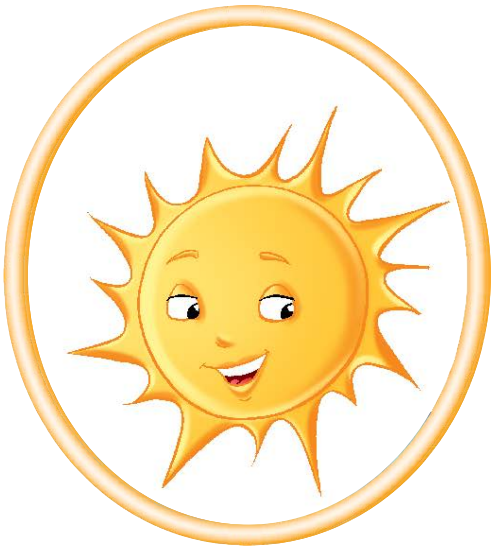

सूरज

यात्री

ज्ञान गंगा, दिल्ली

बहुत साल पहले एक बार हवा और सूरज के बीच झगड़ा हो गया। वे इस बात पर झगड़ रहे थे कि उनमें कौन अधिक ताकतवर है। वे दोनों ही खुद को एक-दूसरे से अधिक शक्तिशाली बता रहे थे। सूरज ने हवा से कहा, ''मैं तुमसे अधिक शक्तिशाली हूँ।'' हवा ने भी सूरज से कहा, ''मैं भी तुमसे अधिक शक्तिशाली हूँ।'' उनकी बहुत देर तक बहस चली, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। उन्होंने बहुत देर तक सोचा, लेकिन उन्हें अपनी ताकत साबित करने के लिए कोई विचार नहीं आया। अंत में उन्होंने सोचा कि दूसरों से श्रेष्ठ बनने के लिए उन्हें शक्ति कैसे साबित करनी चाहिए।

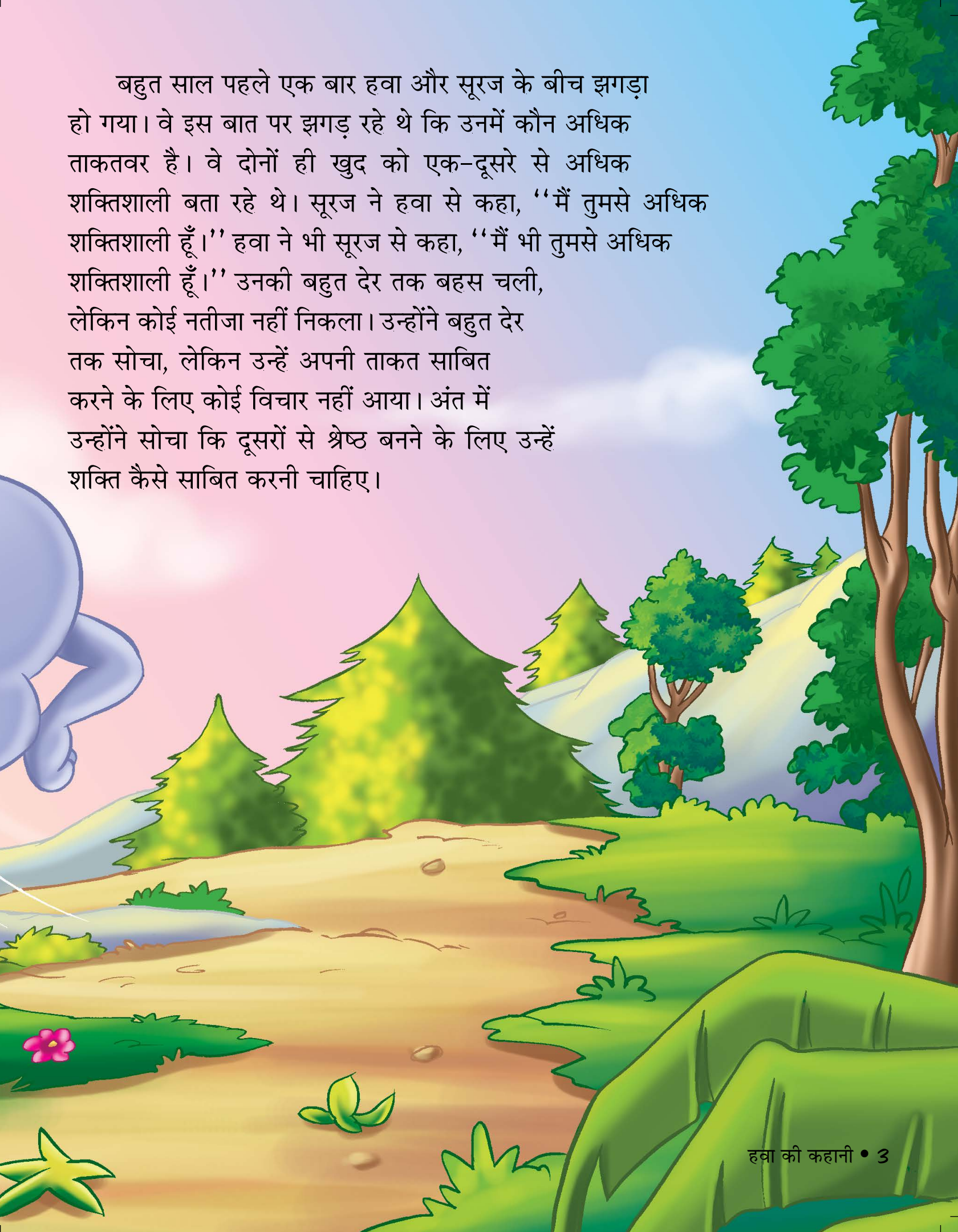

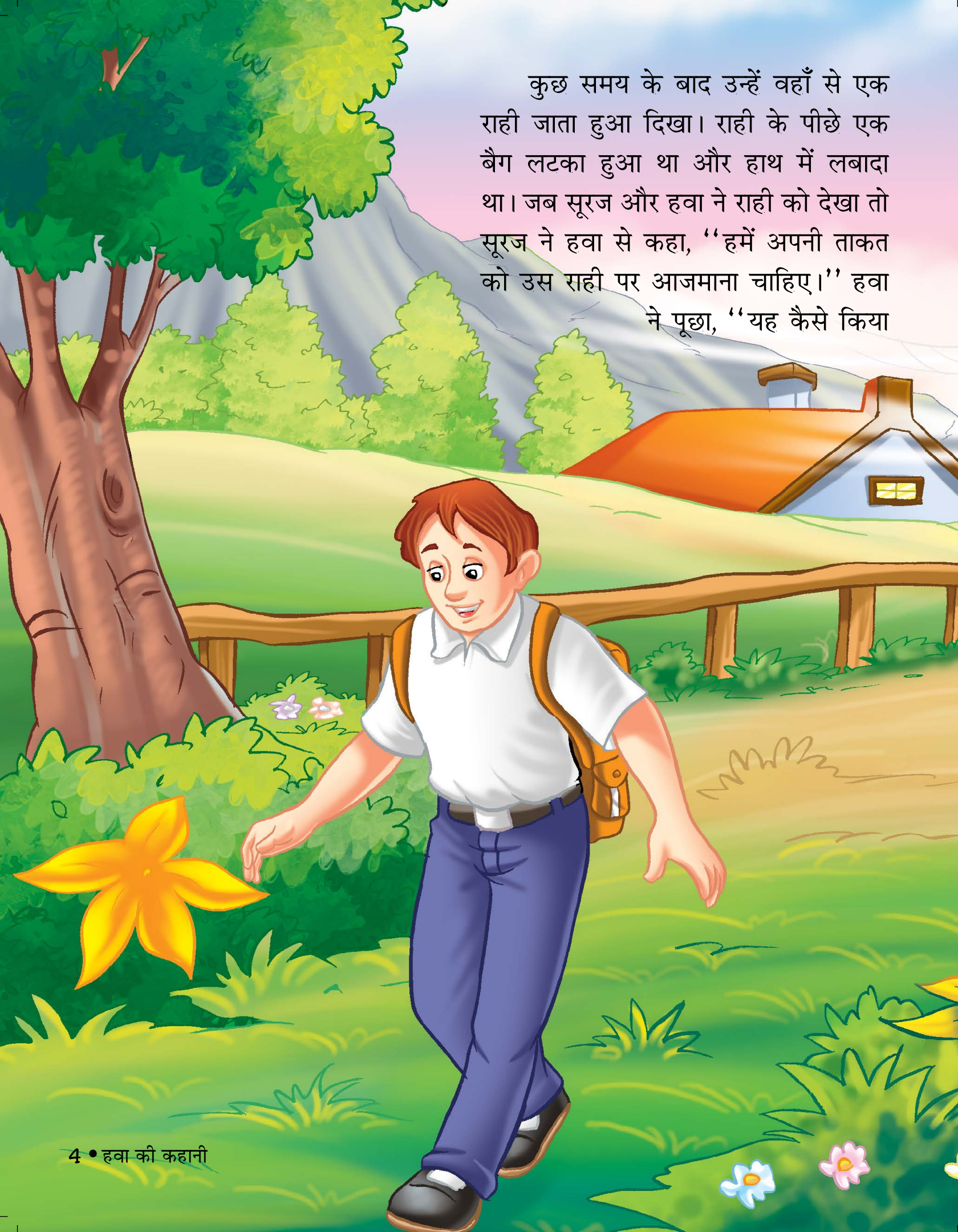

कुछ समय के बाद उन्हें वहाँ से एक राही जाता हुआ दिखा। राही के पीछे एक बैग लटका हुआ था और हाथ में लबादा था। जब सूरज और हवा ने राही को देखा तो सूरज ने हवा से कहा, ''हमें अपनी ताकत को उस राही पर आजमाना चाहिए।'' हवा ने पूछा, ''यह कैसे किया

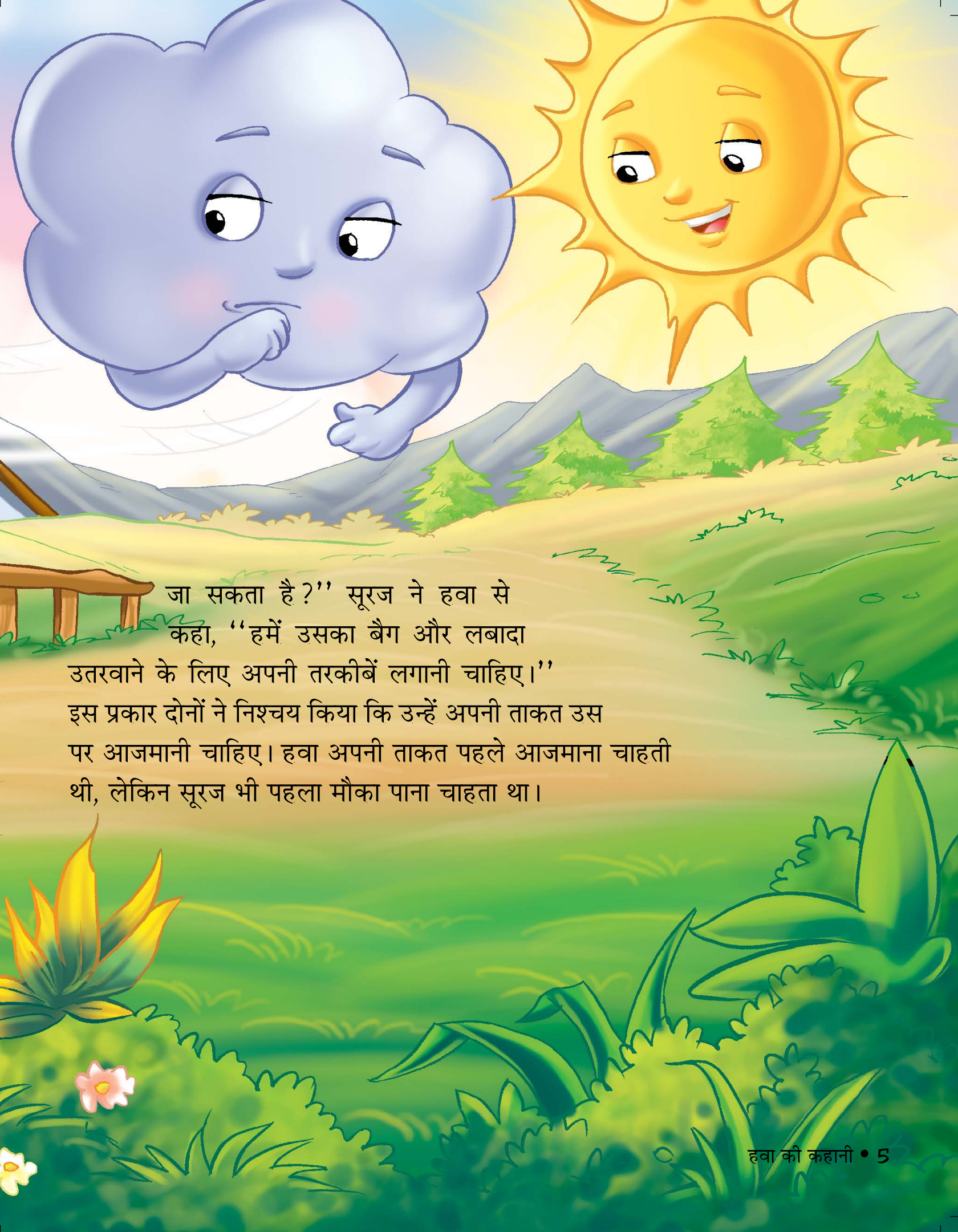

जा सकता है?'' सूरज ने हवा से कहा, ''हमें उसका बैग और लबादा उतरवाने के लिए अपनी तरकीबें लगानी चाहिए।''

इस प्रकार दोनों ने निश्चय किया कि उन्हें अपनी ताकत उस पर आजमानी चाहिए। हवा अपनी ताकत पहले आजमाना चाहती थी, लेकिन सूरज भी पहला मौका पाना चाहता था।

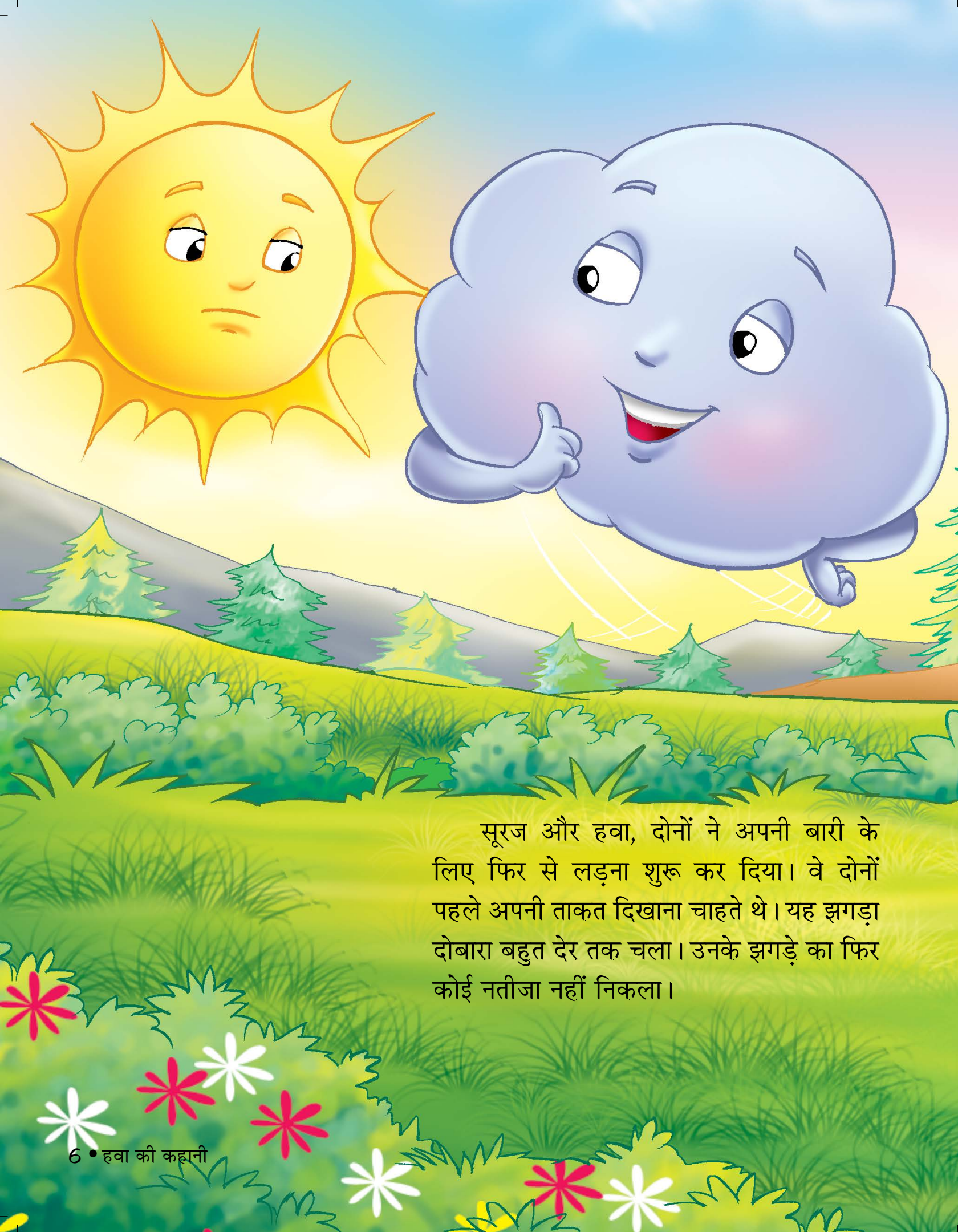

सूरज और हवा, दोनों ने अपनी बारी के लिए फिर से लड़ना शुरू कर दिया। वे दोनों पहले अपनी ताकत दिखाना चाहते थे। यह झगड़ा दोबारा बहुत देर तक चला। उनके झगड़े का फिर कोई नतीजा नहीं निकला।

अंत में सूरज ने कहा, ''चलो देखते हैं, हममें से कौन उसका लबादा उतरवा सकता है ?''
बहुत समय तक बहस करने के बाद उनका पहले मौके के लिए समझौता हो गया। अंततः हवा को अपनी चाल चलने का पहला मौका मिला। अपनी उग्र और तेज गति के कारण लबादा और बैग उतरवाने को लेकर उसमें काफी आत्मविश्वास था।

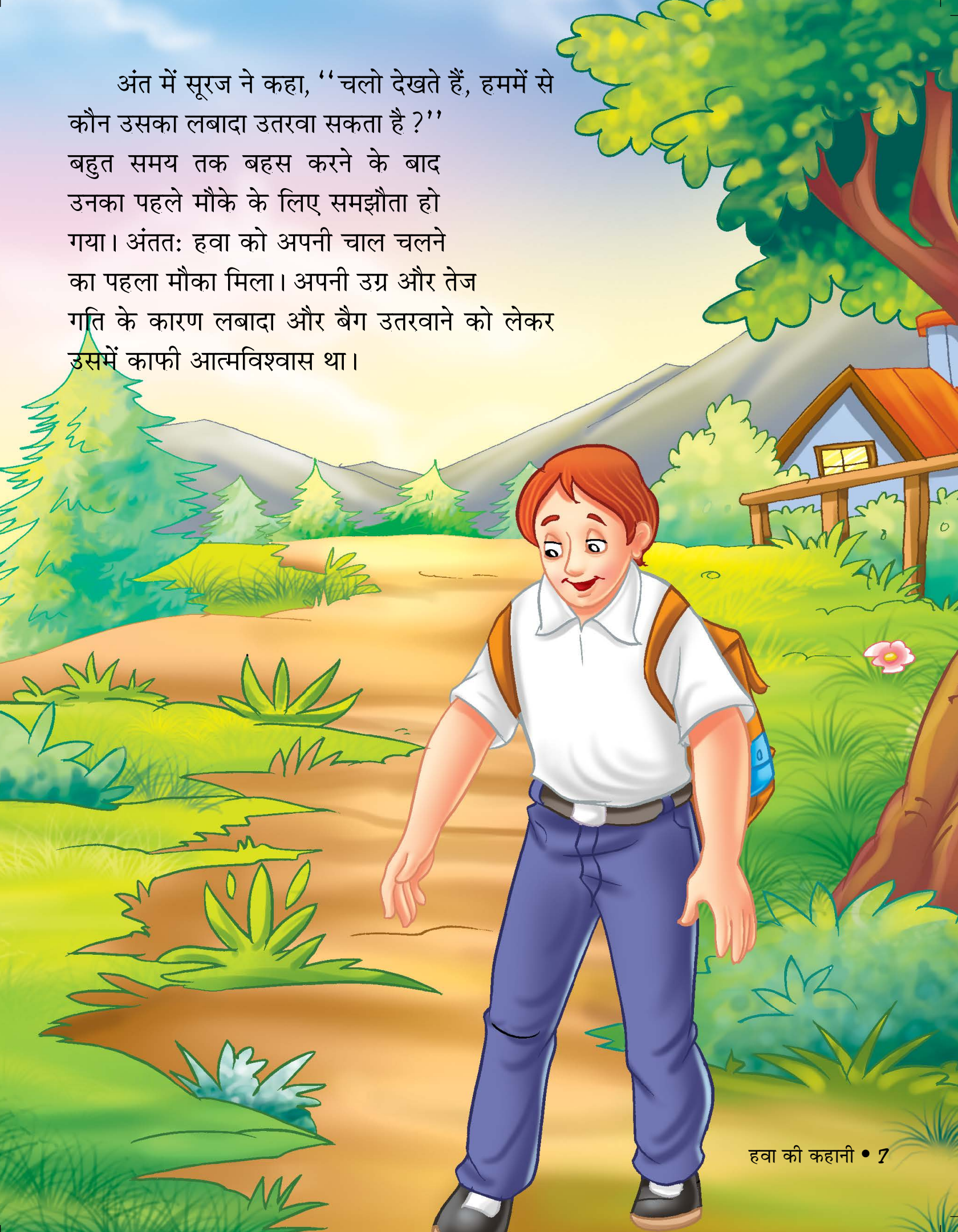

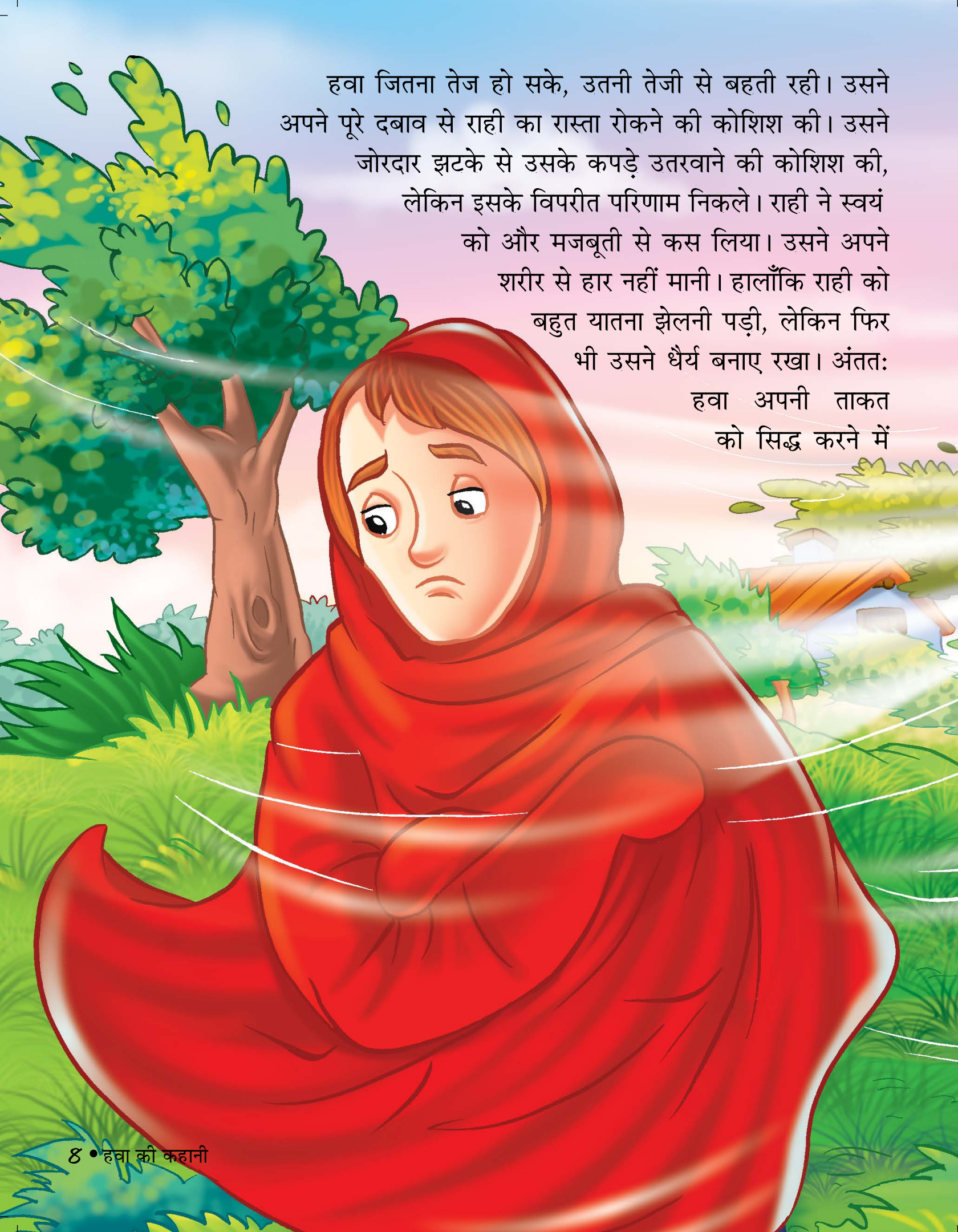

हवा जितना तेज हो सके, उतनी तेजी से बहती रही। उसने अपने पूरे दबाव से राही का रास्ता रोकने की कोशिश की। उसने जोरदार झटके से उसके कपड़े उतरवाने की कोशिश की, लेकिन इसके विपरीत परिणाम निकले। राही ने स्वयं को और मजबूती से कस लिया। उसने अपने शरीर से हार नहीं मानी। हालाँकि राही को बहुत यातना झेलनी पड़ी, लेकिन फिर भी उसने धैर्य बनाए रखा। अंततः हवा अपनी ताकत को सिद्ध करने में

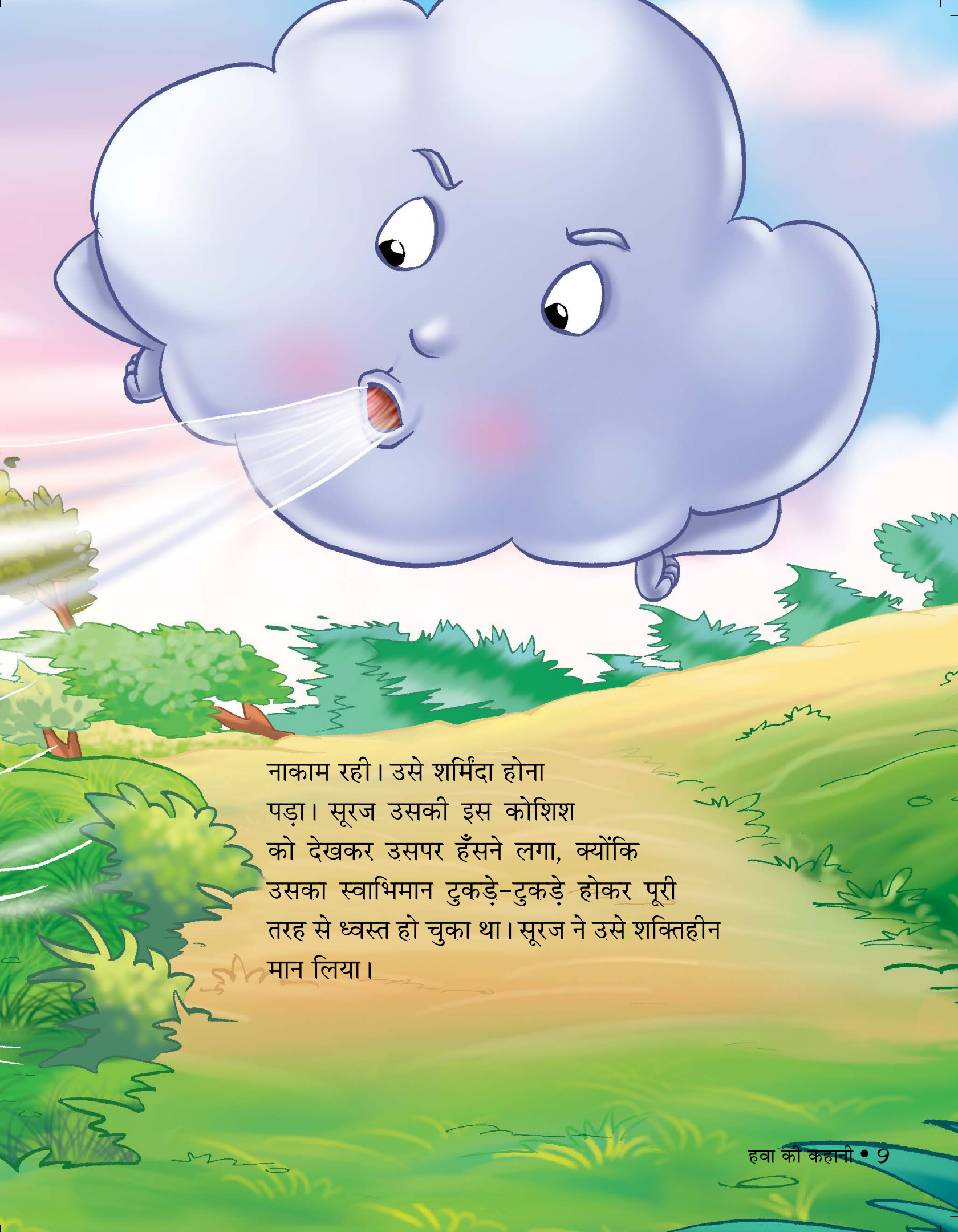

नाकाम रही। उसे शर्मिंदा होना पड़ा। सूरज उसकी इस कोशिश को देखकर उसपर हँसने लगा, क्योंकि उसका स्वाभिमान टुकड़े-टुकड़े होकर पूरी तरह से ध्वस्त हो चुका था। सूरज ने उसे शक्तिहीन मान लिया।

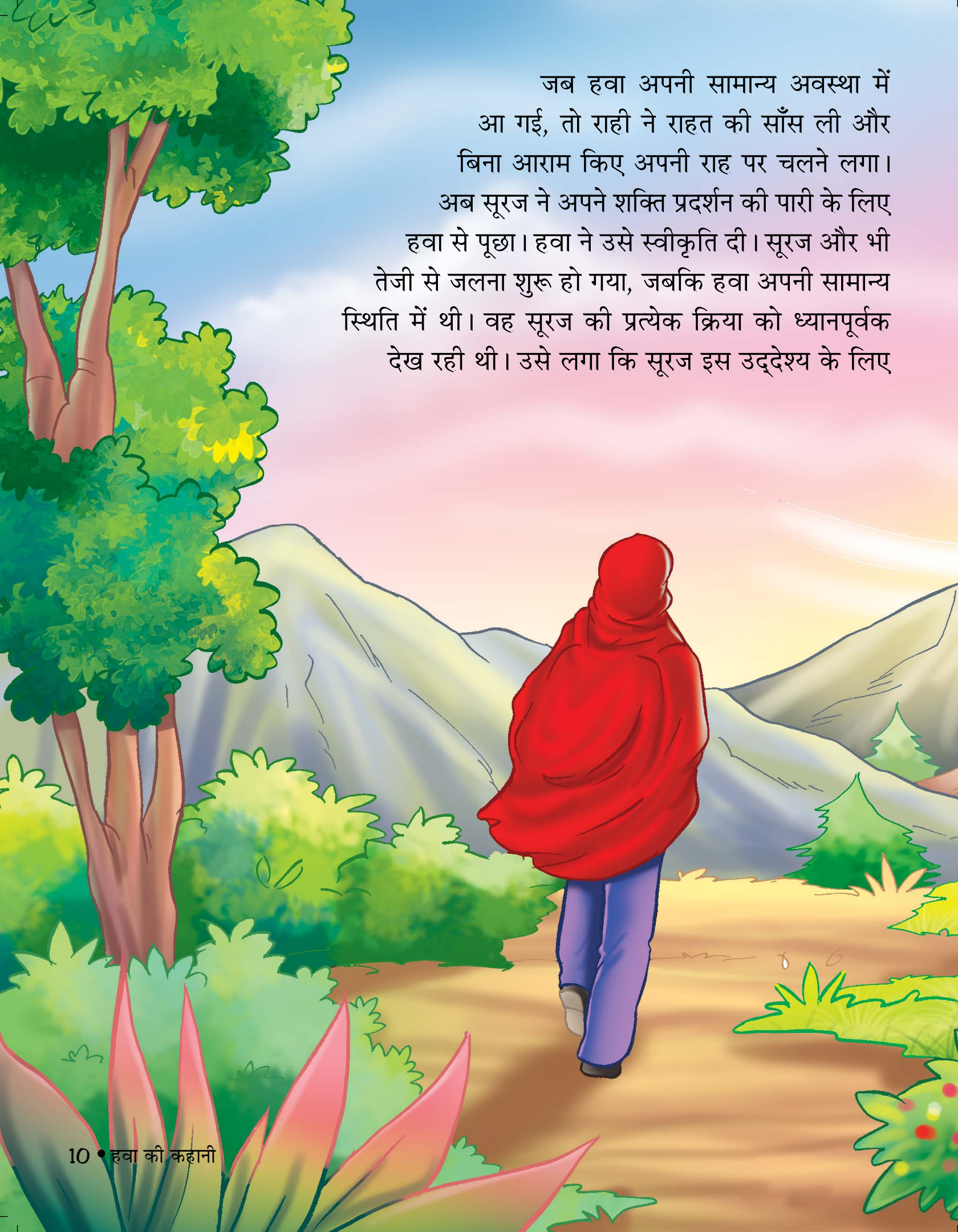

जब हवा अपनी सामान्य अवस्था में आ गई, तो राही ने राहत की साँस ली और बिना आराम किए अपनी राह पर चलने लगा। अब सूरज ने अपने शक्ति प्रदर्शन की पारी के लिए हवा से पूछा। हवा ने उसे स्वीकृति दी। सूरज और भी तेजी से जलना शुरू हो गया, जबकि हवा अपनी सामान्य स्थिति में थी। वह सूरज की प्रत्येक क्रिया को ध्यानपूर्वक देख रही थी। उसे लगा कि सूरज इस उद्देश्य के लिए

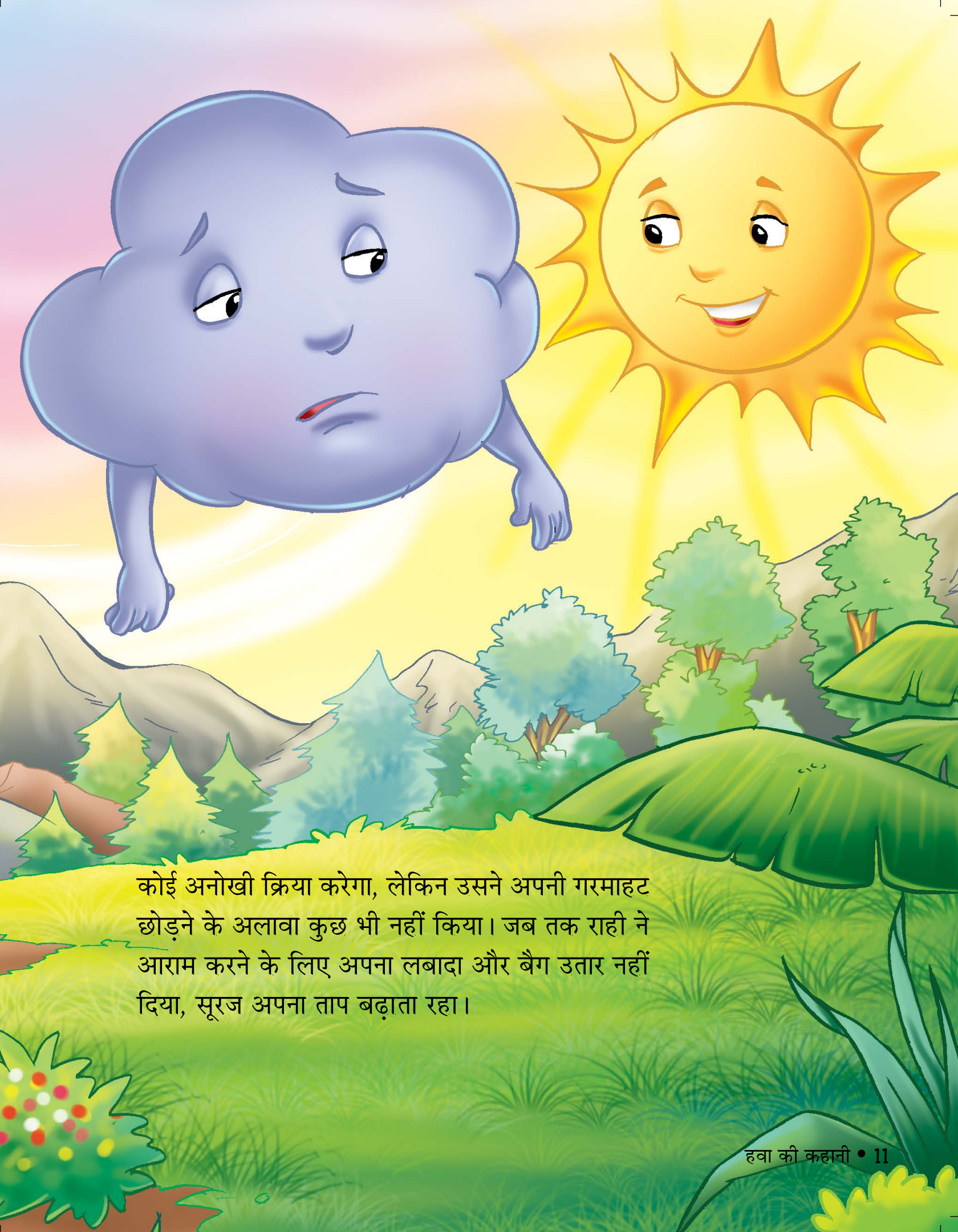

कोई अनोखी क्रिया करेगा, लेकिन उसने अपनी गरमाहट छोड़ने के अलावा कुछ भी नहीं किया। जब तक राही ने आराम करने के लिए अपना लबादा और बैग उतार नहीं दिया, सूरज अपना ताप बढ़ाता रहा।

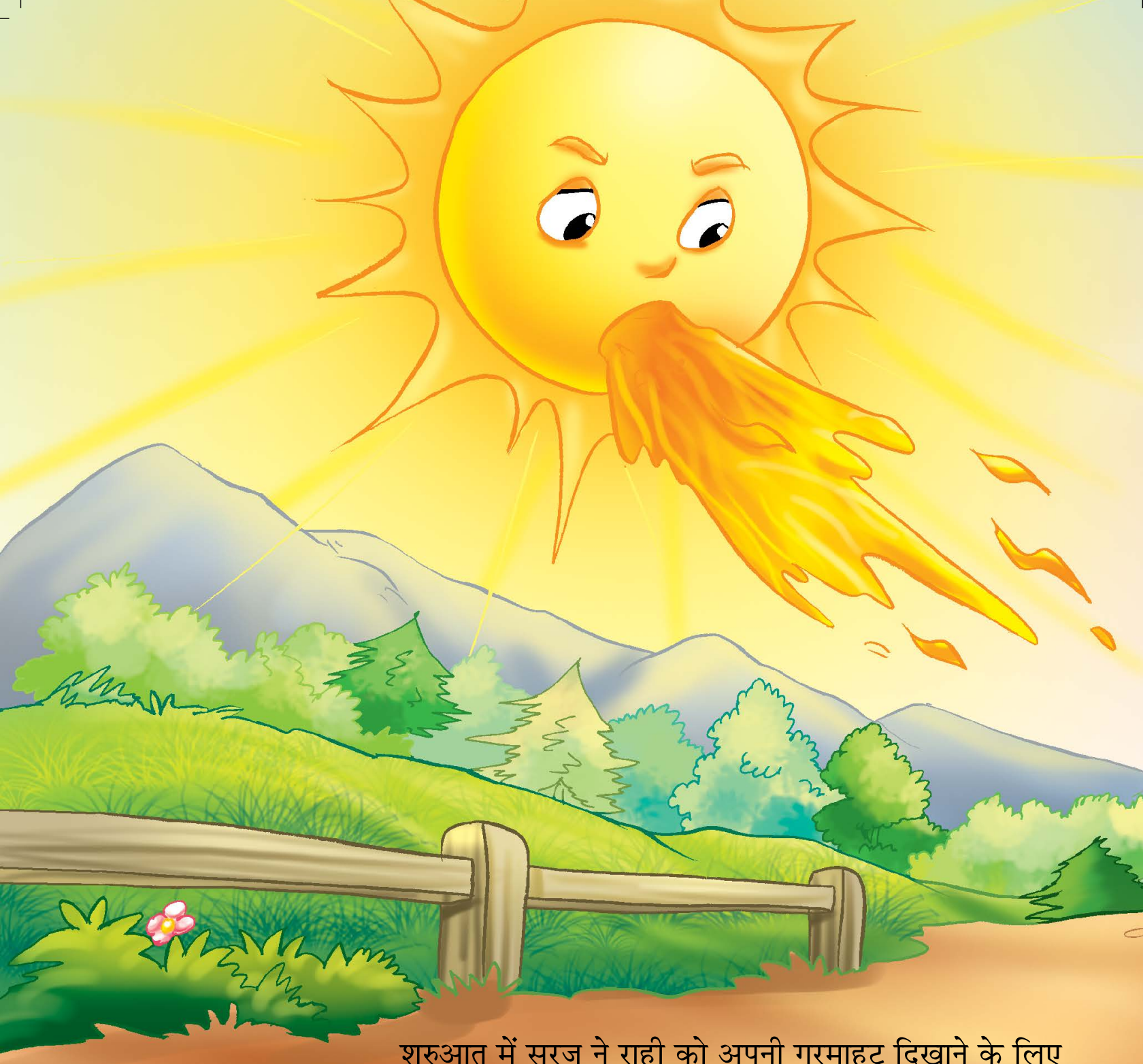

शुरुआत में सूरज ने राही को अपनी गरमाहट दिखाने के लिए धीरे-धीरे अपना ताप छोड़ा। राही को सूरज का ताप तकलीफदेह महसूस होने लगा। इसलिए उसने अपने लबादे को गले से निकाल दिया। लेकिन सूरज और भी प्रज्वलित होने लगा। अब राही को चिलचिलाती गरमी महसूस होने लगी।

उसने थोड़ी ही दूरी तय की थी कि असहनीय गरमी के कारण उसे अपने कपड़े भी उतारने पड़े। उसने अपने कपड़े उतारकर बैग में रखे और आराम करने के लिए एक पेड़ के नीचे बैठ गया। राही हवा की तेज गति के तुरंत बाद सूरज की अचानक गरमी का कारण समझ नहीं सका। वह सूरज की गरमी को कोसने लगा, जिसके कारण उसे अपने कपड़े उतारने के लिए विवश होना पड़ा।

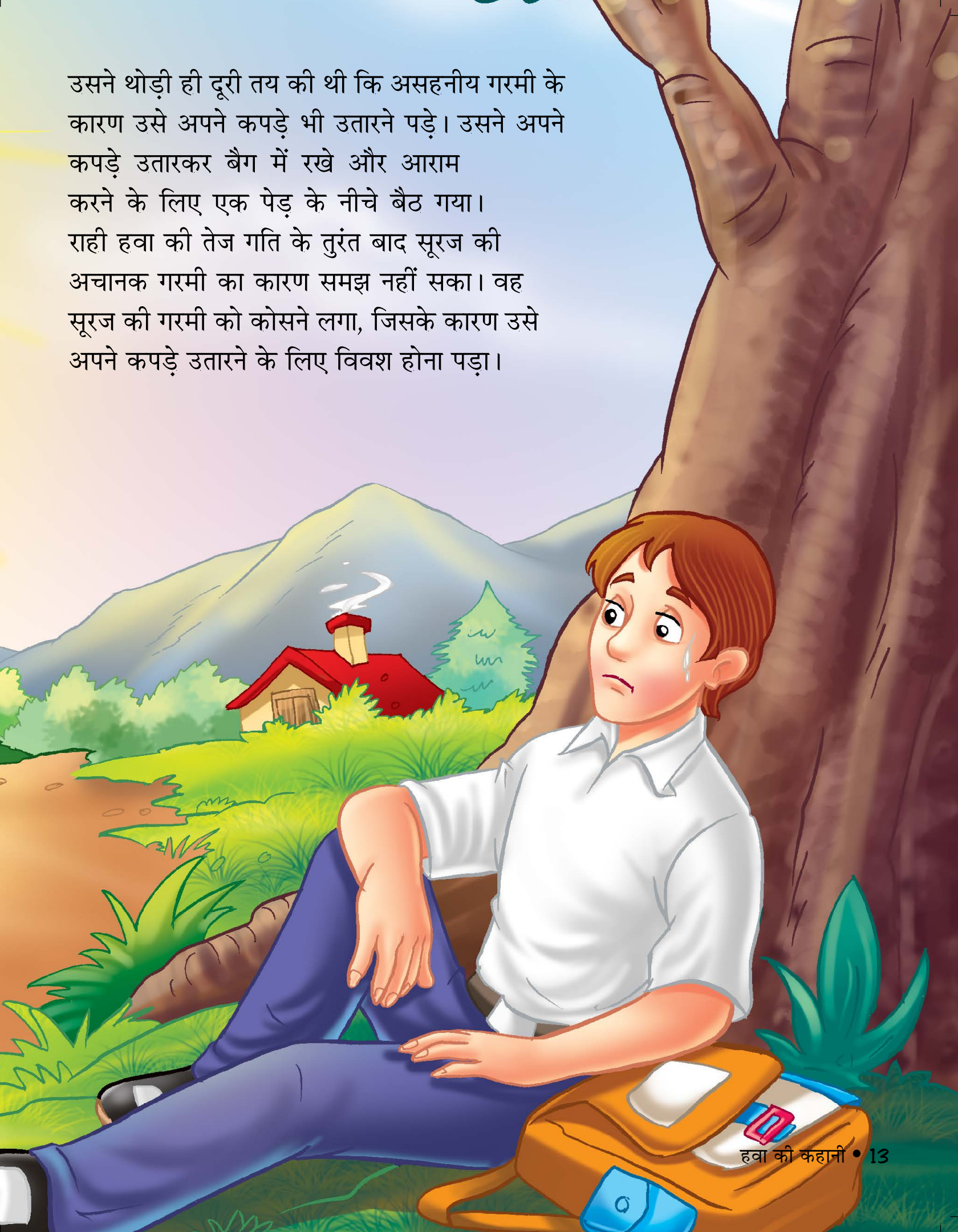

हवा सूरज की ताकत और तरकीब को देखकर आश्चर्यचकित रह गई। सूरज बहुत ही शिष्टता के साथ अपना कार्य करता रहा। उसने अपने ताप से राही पर दवाब बनाया। राही व्याकुल होने लगा और अपने कपड़े उतार दिए। हवा विश्वास नहीं कर सकी कि यह सब इतनी आसानी से कैसे हुआ। सूरज ने हवा से कहा, ''तुम खुद ही देख सकती हो,

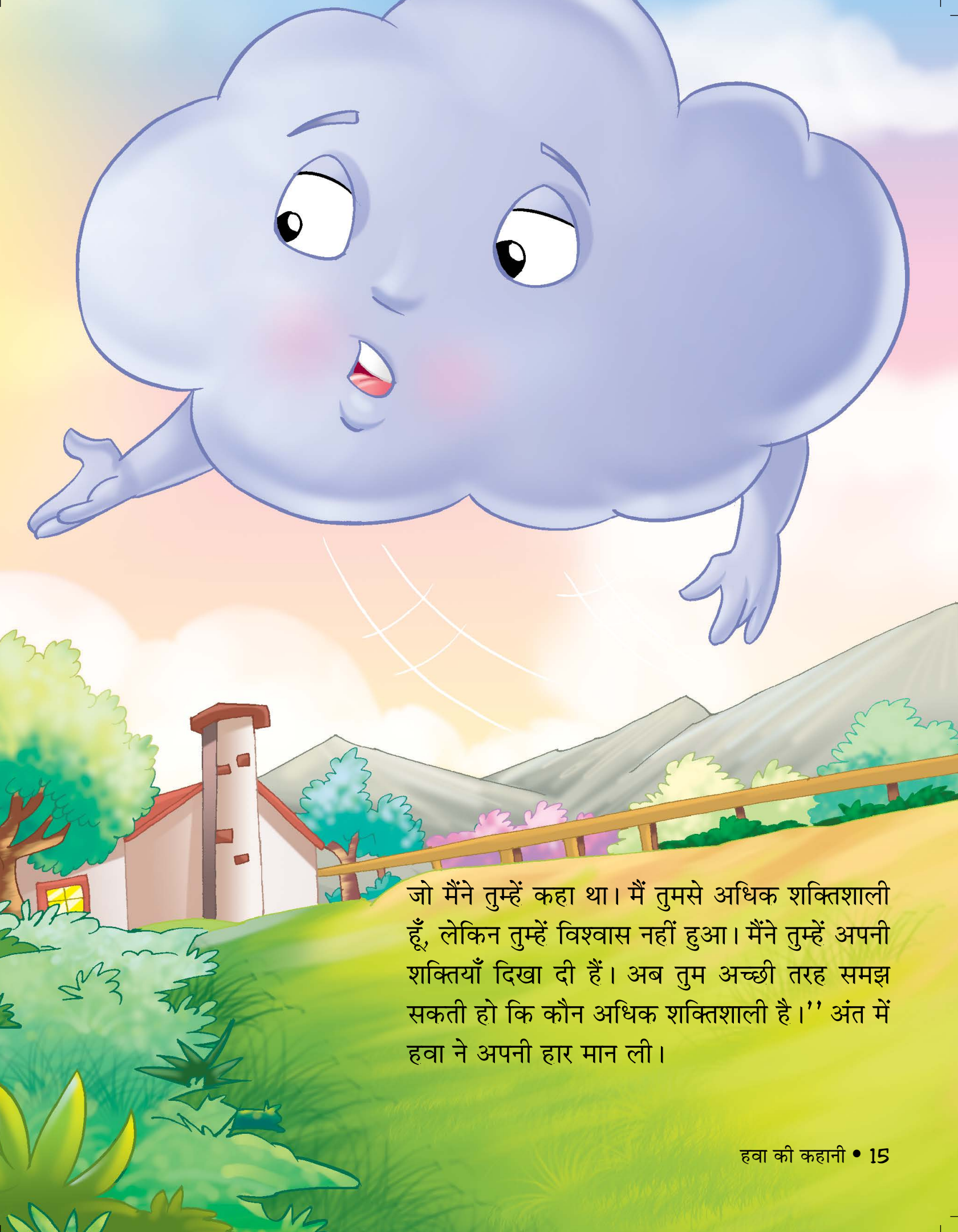

जो मैंने तुम्हें कहा था। मैं तुमसे अधिक शक्तिशाली हूँ, लेकिन तुम्हें विश्वास नहीं हुआ। मैंने तुम्हें अपनी शक्तियाँ दिखा दी हैं। अब तुम अच्छी तरह समझ सकती हो कि कौन अधिक शक्तिशाली है।'' अंत में हवा ने अपनी हार मान ली।

सीख : सच्चाई स्वीकार कर लेनी चाहिए।

जय और विजय एक ही स्कूल के विद्यार्थी थे। जय विजय से अधिक तीव्रबुद्धि का था, लेकिन विजय ऐसा नहीं मानता था। एक दिन उनकी कक्षा की अध्यापिका ने उनसे घर में एक चार्ट बनाकर लाने के लिए कहा। उन्होंने सबसे बेहतर चार्ट के लिए पुरस्कार की घोषणा भी की। जय ने चार्ट को सुंदर तरीके से तैयार किया और इसे अध्यापिका को दिखा दिया। जब अध्यापिका ने जय के चार्ट को प्रथम पुरस्कार के लिए चुना तो विजय बहुत ही चिढ़ गया। लेकिन अंत में विजय ने यह सच्चाई स्वीकार कर ली और भविष्य में सफलता प्राप्त की।